A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

मुन्नी की गाय

एक लड़की थी। उसका नाम मुन्नी था। उसके घर में एक गाय थी। वह गाय बड़ी सीधी थी। मुन्नी उसका कान पोंछती थी। उसके मुँह में हाथ डालती थी। पर वह गाय कुछ न बोलती थी। जब मुन्नी की माता नाराज़ होती तो वह दौड़ कर गाय के पास आती और कहती—"अम्मा ने माला है।" यह यह सुनकर गाय सिर हिलाती, जीभ निकालती और मुन्नी का सिर चाटने लगती। तब मुन्नी कहती—"इछी छींग छे अम्मा के मालना, कूब मालना।" गाय फिर सिर हिलाती और मुन्नी फिर खुश हो कर खेलने लगती।

एक दिन मुन्नी मैले कपड़े पहने खेल रही थी। यह देख कर माता बिगड़ी। फिर क्या था। मुन्नी भागी और गाय के पास आई। गाय पागुर (जुगाली) कर रही थी। मुन्नी ने समझा—मुँह बना रही है। उसने गाय का कान पकड़ कर खींचा, नाक में अँगुली छोड़ी। गाय उठ कर खड़ी

हो गयी। पर उसका मुँह चलता ही रहा। यह देख कर मुन्नी रो पड़ी। उसी समय उसका भाई गोपाल आया। उसने पूछा—"क्या बात है?" मुन्नी ने जवाब दिया—"गैया बिलाती है।" यह सुन कर गोपाल हँस पड़ा। उसे गोद में लेकर माता के पास ले गया। और बोला—"अम्मा! तुम गैया को कभी सजा नहीं देती हो। इसी लिये वह मुन्नी को बिराती है।"

माँ ने पूछा—"क्यों मुन्नी?"

मुन्नी ने रोकर कहा—"हाँ तलो, देखो न, अबो बिलाए ही तली दाती है।"

माँ ने जाकर देखा—गाय पागुर (जुगाली) कर रही है। उसे भी बड़ी हँसी आई। उसने मुन्नी को उठा कर गोद में ले लिया और कहा—"माल गैया को।"

मुन्नी ने अपने छोटे हाथों से गाय के माथ पर मारा और उसके बाल पकड़ पकड़ कर नोचे। अब गाय ने पागुर करना बन्द कर दिया और सिर हिला कर मुन्नी को चाटना चाहा।

मुन्नी ने कहा—"अब तो न बिलाओगी?"

गाय ने सिर हिलाया। इस बार खुश होकर मुन्नी गाय का मुँह चूमने लगी। माता यह देख कर बड़ी खुश हुई। और मुन्नो को गाय की पीठ पर बैठाल कर गाने लगी—

गैया! दे तू दूध मलैया।
खावे मुन्नी, तरसे भैया॥
लेय बलैया तेरी मैया।
गैया! दे तू दूध मलैया॥

—जगमोहन सिंह।

दुगनी कीमत

एक सिपाही लौट लड़ाई से घर आया।
टूटी फूटी एक घड़ी सोने की लाया॥
घड़ीसाज़ के पास चला उसको बनवाने।
और कहा—बनवाई लोगे कितने आने॥
घड़ी देख कर घड़ीसाज़ मन ही मन अपने।
हँसा और फिर लगा सिपाही से यों कहने॥
जितने में यह घड़ी पड़ी थी तुमको भाई।
उससे दुगनी अब होगी इसकी बनवाई॥
उससे कहने लगा सिपाही यह सुन हँस कर।
जितने का घर नहीं चढ़ा उतने का छप्पर॥
दूनी लो तुम खैर नहीं इन्कार मुझे है।
इतनी ही है बात अगर, स्वीकार मुझे है॥
देकर घूँसा एक इसे था मैंने पाया।
ले सकते हो दो तुम यदि यह ही मन आया॥

—लक्ष्मण स्वरूप गुप्त।

उसने लालटेन जलायी और आँगन में आकर देखा कि गोमती गुड़ियों को लिये पृथ्वी पर पड़ी है। माता उसे उठा कर अन्दर ले आई और बोली—"मैं इनसे अच्छी अच्छी और नई गुड़ियाँ बनवा देती, इन्हें भीग जाने देती। रात में अकेले न उठना चहिये।" गोमती—"क्यों नहीं उठना चहिये अम्मा! तुमको मेरे लिये उठना पड़ा कि नहीं? यदि तुम चाहो तो क्या तुमको मुझसे अच्छी लड़की नहीं मिल सकती?" यह सुन कर माता का दिल दया से भर गया। उसने गोमती को चूम कर छाती से लगा लिया। और कहा—"जो जिसको प्यार करता है वह उसके लिये प्राण तक दे सकता है।"

—कुसुम कुमारी देवी।

बरसात में

जो ईश्वर है जल बरसाता ;
दिया उसी ने है यह छाता ॥
टरटों, टरटों, करो न लाला !
मैं न कभी हूँ डरने वाला ॥

'शिशु' के नियम

[१] शिशु हर अंग्रेज़ी महीने की २५ तारीख को प्रकाशित होता है।

[२] डाक-व्यय सहित इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य २) मात्र है।

[३] नमूने की कापी मँगाने वालों को चाहिये कि ≡) का टिकट भेज कर हमसे नमूना मँगा लें। यदि वे ग्राहक हो जायँगे तो उन्हें शेष अङ्कों के लिये केवल १॥-) देना पड़ेगा।

[४] ग्राहकों को चाहिए अपना पता पूरा और साफ लिखें जिससे उनके पास पत्र पहुँचने में गड़बड़ी न पड़े।

[५] वर्तमान समय की राजनीति तथा धार्मिक झगड़ों से सम्बन्ध रखने वाले लेख इस पत्र में नहीं छापे जाते।

[६] विज्ञापन की छपाई एक बार के लिए प्रति पंक्ति।) आधे पृष्ठ के ४) और पूरे पृष्ठ के ७) है। अधिक दिनों के लिये विज्ञापन छपाना हो तो पत्र-व्यवहार करके तै कर लेना चाहिए।

[७] बैरङ्ग पत्र नहीं लिए जायँगे। जवाबी कार्ड या आध आने का टिकट आये बिना किसी के पत्र का उत्तर नहीं दिया जायगा।

[८] लेख, परिवर्त्तन के पत्र, समालोचना के लिए पुस्तकें आदि, रुपया तथा और सब तरह के 'शिशु' सम्बन्धी पत्र इस पते पर आने चाहिए—

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०

'शिशु'-कार्य्यालय, इलाहाबाद।

पं० सुदर्शनाचार्य के प्रबन्ध से सुदर्शन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित।

…शम वर्ष] सितम्बर १९२५ [नवम अङ्क

[वार्षिक मूल्य २)] सम्पादक— [एक प्रति ≡)

पण्डित सुदर्शनाचार्य्य बी० ए०

बस्ता बिखरा छतरी छूटी ।
सुध बुध सब तितली ने लूटी ॥

शिशु

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान । हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुम हीं पर आशा है सारी । मुख निरखे भारत महतारी ॥

दशम वर्ष } प्रायग, सितम्बर १९२५ { नवम अङ्क

बाल-विनय

मैं हूँ पिघले स्वर्ण सरीखा, तुम हो चतुर सुनार समान ।
मेरी सारी कल-कुञ्जी बस, हाथ तुम्हारे हैं भगवान् !
हे नटनागर ! मुझ अबोध को अपना एक खिलौना मान ।
जिस साँचे में, जैसा चाहो, शीघ्र ढाल लो कृपा-निधान !
समय न चूको, बिगड़ न जाऊँ, मुझ पर रखना गहरा ध्यान ।
ढल जाऊँगा अगर भला तो, तुम्हें रिझाऊँगा भगवान !

—'स्वर्ण-सहोदर'।

SEPTEMBER 1925

गया। अब कृष्ण का सामना करने वाला कोई न रह गया।

यह तो हुआ कृष्ण का बाल-जीवन। आगे चल कर उन्होंने और भी बड़े बड़े काम किये हैं जिनका वर्णन फिर कभी किया जायगा।

कृष्ण बड़े वीर थे, मारने मरने से नहीं डरते थे। उनका कहना था चाहे जो हो मनुष्य को अपने कर्म से पीछे न हटना चाहिये। वे कर्म-योगी थे, भगवान थे, हम लोग उनका नाम लेकर अपने को धन्य मानते हैं। बालको! आओ हम सब मिल कर प्रार्थना करें कि भगवान कृष्ण फिर अवतार लें और उसी भाँति आज कल के बढ़ते हुए अधर्म का भी नाश करें।

—राधाकृष्ण बी० ए०।

नकली और असली

नकली आँखें बीस लगा ले,
अंधा देख न सकता है।
मनों पोथियाँ बगल दबा ले,
मूरख सोच न सकता है॥
लदे पीठ पर नित्य सरंगी,
गदहा राग न कह सकता।
चाहे जितना पान चबा ले,
भैंसा स्वाद न लह सकता॥
नहीं चढ़ाकर कोरी कलई,
ताँबा बन सकता सोना।
नहीं मोर के पंखे पाकर,
कौवे का मिटता रोना॥
नकल व्यर्थ की करता है जो,
सदा अन्त में रोता है।
बिना गुणों के नहीं जगत में,
मान किसी का होता है॥

—अरुण प्रकाश 'विशारद'।

Sep. 1925

किन्तु बुरा लड़का बगुलों सा
मछली मारा करता है॥
अच्छा लड़का अन्धे को
अपनी अँगुली पकड़ाता है।
किन्तु बुरा बेचारे के
पीछे कुत्ते दौड़ाता है॥
अच्छे लड़के की बोली मधु
मक्खी सी है मधु देती।
किन्तु बुरे की बर्र की तरह
डंक मार पीड़ा देती।
अच्छा लड़का खुद हँसता है
और हँसाता है सबको।
किन्तु बुरा लड़का रोता है
और रुलाता है सबको॥
इसीलिये अच्छा लड़का
दुनिया में आदर पाता है।
किन्तु बुरा लड़का अपने
घर में भी पीटा जाता है॥

—लक्ष्मी कान्त वर्मा।

ससुराल को

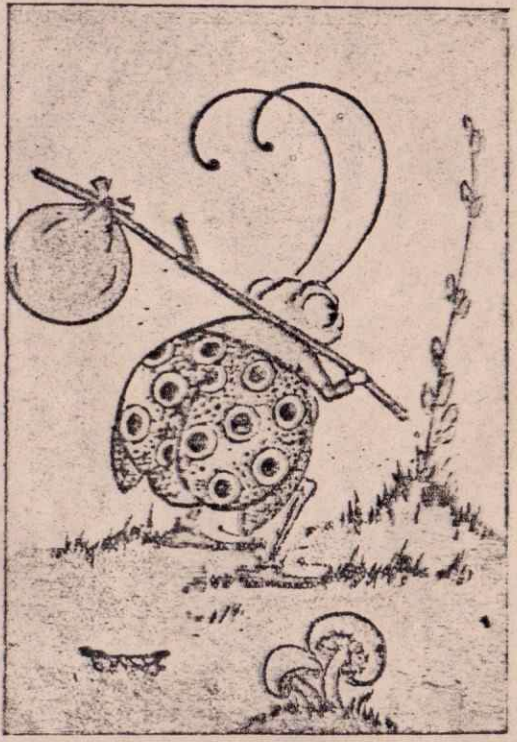

जा रहे हैं सेठ जी ससुराल को।
धन्य है इनकी निराली चाल को॥

Sep. ~~1926~~ 1925

बराबर भागों में बाँट दो और हर एक भाग को ऊपर लिखे सात रंगों में से एक एक रंग से रँग दो। सातों भागों को सातों रंगों से रँग कर ज़ोर से उस लट्टू को नचा दो। जब लट्टू नाचेगा तो रँगा हुआ ऊपर का भाग सफ़ेद दिखाई देगा; क्योंकि लट्टू नाचने से सब रंग एक में मिलकर दीखेंगे। लट्टू के रुक जाने पर फिर सातों रंग ज्यों के त्यों अलग अलग हो जावेंगे।

इस लिये सूर्य्य की सफ़ेद रोशनी में भी सात रंग हैं। सूर्य्य की किरणें पानी की नन्हीं नन्हीं बूदों में से होकर जाती हैं। ये बूँदें तिपहले शीशे की तरह किरणों को उन्हीं सात रंगों में अलग अलग विभाजित कर देती हैं जिनसे वे बनी हैं। (तिपहल शीशे में यह गुण होता है कि वह सफ़ेद रोशनी को जो उसमें होकर जाती है सात रंग में बाँट देता है)। अपने सात रंगों में विभाजित होकर किरणें बूँदों के बाहर आती हैं। फिर ये ही रंग बिरंगी किरणें हमको सुन्दर और मन लुभाने वाले इन्द्रधनुष के रूप में दिखाई देती हैं।

इस प्रकार वास्तव में इन्द्रधनुष सूर्य्य की उन किरणों का प्रतिबिम्ब है जिनको पानी की नन्हीं नन्हीं बूँदों ने उनके असली सात रंग में विभाजित कर दिया है।

—शान्ति देव।

मैं क्या चाहता हूं ?

(१)

मैं चाहता हूँ एक दिन तलवार हो इस हाथ में।
हों साथ ही मेरे सभी मज़बूत साथी साथ में॥
डङ्का बजा कर युद्ध का लूँ जीत सब संसार ही।
लोग समझें हो गया श्री राम का अवतार ही॥

(२)

फिर चाहता हूँ दूसरे दिन फूल हो इस हाथ में।
हों साथ ही मेरे सभी सुकुमार साथी साथ में॥
डङ्का बजा कर प्रेम का लूँ जीत सब संसार ही।
लोग समझें हो गया श्री कृष्ण का अवतार ही॥

Sep. 1925

(३)

फिर चाहता हूँ तीसरे दिन सूत हो इस हाथ में।
हो एक चर्खे के सिवा साथी न कोई साथ में॥
डंका स्वदेशी का बजे लखता रहे संसार ही।
लोग समझें देश की सब दीनता है जा रही॥

(४)

फिर चाहता हूँ अन्त में कुछ भी न हो इस हाथ में।
हों एक भी साथी तथा सङ्गी न मेरे साथ में॥
है जो नहीं पड़ता दिखाई जा उसी से मैं मिलूँ।
और फिर सब के दिलों में सत्यता बन कर खिलूँ॥

(५)

इस तरह मैं चाहता हूँ कुछ न कुछ सब रोज ही।
हा किन्तु सच्ची बात की पाया न कर कुछ खोज ही॥
चिन्ता बड़ी है बढ़ रही, हूँ सोचता दिन रात मैं।
अब बालको! तुम ही कहो हूँ चाहता क्या बात मैं॥

—"श्रीश"।

हमारी चित्रावली

अगर न हिलने पाऊँगा मैं।
फोटो नहीं खिचाऊँगा मैं॥

[प्रेषिका—श्री० विद्या देवी, लखनऊ।]

सब से बड़ा हिंडोला

बालकों ! यों तो तुमने हर एक मेले में छोटे बड़े हिंडोले देखे हैं पर जैसा इस चित्र में दिखाया गया है ऐसा कभी न देखा होगा। यह दुनिया भर में सब से बड़ा हिंडोला था।

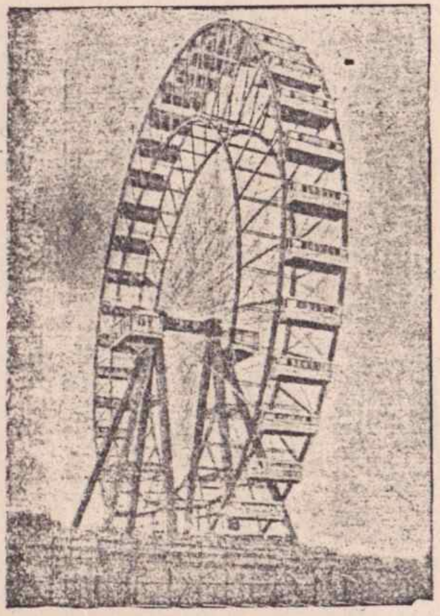

यह झूला लन्दन में बनाया गया था। इसकी गोलाई चौथाई मील थी। जिन खम्भों पर यह बनाया गया था वे १७५ फिट ऊँचे थे। केवल इस हिंडोले की धुरी का बोझ १५१२ मन के लगभग था। वह अन्दर से खोखली बनी थी और जिस

समय यह घूमा करता था लोग उसके अन्दर से इधर उधर आ जा भी सकते थे। इसमें १६०० आदमी बैठ कर एक साथ झूलते थे।

इस हिंडोले को इंजिन चलाता था। एक ऐसा ही हिंडोले जो इससे ज़रा छोटा था एक बार अमेरिका के शिकेगो नामक नगर में भी बनाया गया था। उसमें १४४० आदमी एक साथ बैठ कर झूल सकते थे।

— राम जीवन वर्मा।

मेरा बछड़ा

(१)

बहुत बड़ा है मेरा बछड़ा।
पीता है जल रोज दो घड़ा॥
हरी हरी घासँ खाता है।
साँझ सबेरे चिल्लाता है॥

(२)

गैया के सँग चरने जाता।
दूध नहीं अब पीने पाता॥
पर न जरा है बुरा मानता।
मानों कुछ भी नहीं जानता॥

Sep. 1925

(३)

साथ हमारे खेला करता।
सिर से हमको ठेला करता॥
पर न लड़कियों को है भाता।
शायद उनकी गुड़ियाँ खाता॥

(४)

मेरा घर उसका भी घर है।
पर न मिला उसको बिस्तर है॥
है जमीन ही पर नित सोता।
नहीं चटाई को भी रोता॥

(५)

शायद इसे न पढ़ना आता।
इसी लिये कुछ मान न पाता॥
पर इसकी परवाह न इसको।
मान आन की चाह न इसको॥

(६)

और बड़ा जब हो जावेगा।
खेत जोतने यह जावेगा॥
काम करेगा फिर तन रहते।
वर्षा शीत घाम सब सहते॥

(७)

जो कुछ हैं हम पीते खाते।
इसकी ही मेहनत से पाते॥
है मेरा यह सच्चा साथी।
देकर इसे न लूँगा हाथी॥

—विनोद शर्म्मा।

झूठ बोलने की सज़ा

मोहन बड़ा खिलाड़ी लड़का था। एक दिन वह पाठशाला में सबक याद नहीं कर ले गया। देरी से भी पहुँचा। तब तो गुरु जी उस पर बहुत नाराज़ हुए। जब उन्होंने उससे सबक सुनाने को कहा, तब वह बोला—'आज मैंने सबक याद नहीं किया।' गुरु जी ने कहा—'क्यों याद नहीं किया?' इस पर मोहन ने उत्तर दिया—'क्या करूँ, पिता जी ने एक काम को बाजार भेजा था, वहाँ बड़ी देर लग गई।

Sep 1925

विषय हँसाने वाले हैं। बालक इसको पढ कर हँसते हँसते लोट पोट हो जायँगे।

दूसरी पुस्तक

परियों का देश

इस पुस्तक में परियों की अनेक मनोरंजक कहानियाँ है। एक बार हाथ में लेकर बालक फिर इसे बिना खतम किये नहीं छोड़ेंगे।

तीसरी पुस्तक

बाल-कवितावली

इस में शिशुओं के पढ़ने योग्य अनेक शिक्षा-प्रद और मनोरंजक कविताएं हैं। यह पुस्तक भी ऐसी है कि बच्चे इसको पाकर नहीं छोड़ते। बड़े प्रेम से बार बार पढ़ते हैं यहाँ तक कि पढ़ते पढ़ते इसकी कविताओं को रट डालते हैं।

इन तीनों पुस्तकों का विशेष विवरण अगले 'शिशु' में छपेगा। इतने सस्ते दाम में ऐसी उपयोगी और इतनी बड़ी सचित्र पुस्तके देने का साहस शिशुओं के पाठकों को उत्साहित करने के लिय ही हम कर रहें हैं।

'शिशु' पर कुछ नई सम्मतियां

FRESH OPINIONS

"वास्तव में बच्चों के योग्य सचित्र मासिक पत्र यह है। यह दस वर्षों से शिशु-उपयोगी साहित्य तैयार कर रहा है। इसके लिए हम 'गृहलक्ष्मी' कार्य्यालय को बधाई देते हैं। छोटे छोटे शिशुओं के हाथ में खिलौने न देकर माता-पिता यदि 'शिशु' को दिया करें, तो देश की भावी सन्तान को [illegible] हो। 'शिशु' बच्चों का खिलौना है और उन्हें मिल[illegible]

—माधुरी।

* * * * *

"यह बालकोपयोगी मासिक पत्र पं० सुदर्शनाचार्य बी० ए० के सम्पादकत्व में गत् १० वर्षों से प्रयाग से निकलता है। हमारे सामने जनवरी १९२५ का विशेषाङ्क एवं अप्रेल मास तक की संख्याएं हैं। इन सभी संख्याओं में छोटे-छोटे बालक बालिकाओं के लिए सुन्दर पठनीय सामग्री एवं चित्रादि हैं। इसका बहिरंग भी इतना मनोहारी है कि बालक इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। बालकों के मनोरञ्जन के साथ साथ शिक्षा-प्रचार के उद्देश्य से लिखे हुए इसके लेख एवं चित्रादि आकर्षक ढंग से लिखे और छापे गये हैं। चढ़ी हुई सूरत के वे त्रासनाधिष्ठित मास्टर साहब के गम्भीर शासन से होने वाली बाल-बुद्धि की हानि की यह पुस्तिका एक तरह की दवा है। इसमें सीधी कविताएँ और कहानियाँ भी रहती हैं। हम चाहते हैं कि प्रत्येक बाल बच्चेदार आदमी इस मासिक पुस्तक को मँगाकर अपने बालकों को पढ़ने को देवे।"

—कर्मवीर।

September 1925 सितम्बर

(२) उत्तर स्वच्छ व स्पष्ट लिपि में होना चाहिए।

(३) पुरस्कार प्रत्येक मास भिन्न भिन्न विषयों पर दिया जायगा। विषय-सूची 'शिशु' में प्रकाशित की जायगी।

(४) 'शिशु' के जिस अङ्क में विषय सूची छपी हो उसके प्रकाशित होने के २० दिन के भीतर उत्तर नीचे लिखे पते से भेजने चाहिये। २० दिन के बाद भेजे हुए उत्तरों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

"इन्द्र" मार्फ़त सम्पादक 'शिशु' इलाहाबाद।

(५) पुरस्कार पाने वालों के नाम 'शिशु' में प्रकाशित किए जाएँगे।

(६) उत्तर भेजने वाले बालकों को चाहिये कि वे अपने पत्र में यह लिखें कि वे पुरस्कार किस रूप में लेंगे। जहां तक सम्भव होगा उनके इच्छानुसार ही पुरस्कार दिया जायगा। पत्र में अपना पता पूरा और साफ़ साफ़ लिखना चाहिए।

नयी पहेलियाँ

(१)

एक राग से रहती गाती।
दिन भर चलती कहीं न जाती॥

खाकर जीती हूँ। जब वह खतम हो जाता है तो मर जाती हूँ। तो मेरा नाम बताओ।

—रामसहाय माथुर।

(७)

एक बरात में १०० आदमी आए थे। उनमें से कुछ ब्राह्मण थे, कुछ क्षत्रिय और कुछ वैश्य। जिसके यहां बरात आयी थी उसके पास १०० ही थालियाँ भी थीं। एक ब्राह्मण को ३ थाली, एक क्षत्रिय को २ थाली और तीन वैश्यों को १ थाली के हिसाब से सारे बारातियों में पूरी पूरी थाली बांट दी गयीं तो ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों की संख्या बताओ।

—ओ३म् प्रकाश।

(३)

राम ने श्याम से कहा—यदि तुम मुझे अपने रुपयों का आधा दो तो मेरे पास ५) रु० हो जावें।

श्याम ने उत्तर दिया—यदि तुम अपने रुपयों का तिहाई हिस्सा मुझे दो तो मेरे पास भी उतने ही रुपए हो जावेंगे।

बताओ दोनों के पास कितने कितने रुपए थे ?

—नित्यानन्द पन्त।

(४)

वह कौन सी संख्या है जिसका योग और गुणनफल बराबर होता है।

(५)

चलूं पैर बिन जैसे तीर।
रण में खात[illegible]ाखों वीर॥

(२)

किसके साथ 'रमें'।
पाओगे, 'बाजार में'॥

—श्रीपति सिंह।

(३)

काटोगे सिर मर जाऊँगा।
पैर कटे कम हो जाऊँगा॥
काटो कमर हाथ कहलाऊँ।
और अधिक अब क्या बतलाऊँ॥

—जैदेवी।

(४)

लग लग कहे तो न लगे,
मत लग कह लग जाय॥

चलती फिरती गोभी

नरायन अपने माँ बाप का अकेला लड़का था। इसी लिये वह माँ बाप को प्यारा भी बहुत था। वह दिन भर बाग में खेलता था, पौदों को खराब करता था, पर कोई मना करता था तो रोने लगता था।

एक दिन वह बाग में खड़ा रो रहा था। जब उसे रोते रोते बहुत देर हो गई तो उसे एक बूढ़ा आदमी दिखाई पड़ा। उस आदमी ने पूछा—"बेटा! क्यों रोते हो?"

नरायन बोला—"यह जो अमरूद का पेड़ है मैं इसकी सब पत्तियों को तोड़ डालना चाहता हूँ, पर माली तोड़ने नहीं देता?

यह सुन कर बूढ़ा बोला—"माली तो अच्छा ही करता है। भला पत्तियाँ तोड़ कर क्या पाओगे?"

नरायन ने कहा—"जब पत्तियाँ न रहेंगी तो अमरूद के फलों में खूब धूप लगेगी। इससे वे जल्दी पक जायँगे। इसीलिये।"

बूढ़ा बोला--"तब फलों को चिड़ियाँ खा जायँगी।"

यह सुन कर नरायन कुछ न बोला और रोता ही रहा। तब बूढ़े ने कहा--"अच्छा, तुम इसके सिवाय और क्या चाहते हो?"

नरायन ने कहा--"मैं चाहता हूं कि मेरे मन में जो आवे मैं वही बन जाऊँ।"

यह सुन कर बूढ़े ने नरायन को एक फूल दिया और कहा इसे सूँघ तुम जो चाहोगे वही बन जाओगे। लेकिन यदि तुम अपनी माँ के पैर छू लोगे तो फिर जैसे हो वैसे ही हो जाओगे।

इसके बाद बूढ़ा गायब होगया।

बूढ़े के गायब हो जाने के बाद नरायन ने सोचा कि मैं गोभी बन जाऊँ तो अच्छा है। माली मुझे पहचान न सकेगा और मैं उसे खूब परेशान करूँगा। बस वह फूल सूँघ कर गोभी बन गया। उसके हाथ पाँव सर आँखें सब गायब होगये। जहाँ गोभी के पेड़ लगे थे वहीं जाकर वह खड़ा होगया। उसी समय माली उधर आ निकला। नरायन को देख कर उसने

समझा कि यह सब गोभियों से कोई अच्छी गोभी है। बस माली एक ओर को चला गया।

माली के जाते ही नरायन बाग़ में उत्पात मचाने लगा। उसने कहीं जमीन खोद डाली, कहीं गमले तोड़ और कहीं पौधे उखाड़ डाले। इत्तिफ़ाक़ से माली घूमता घामता फिर आगया। उसे देख कर नरायन गोभियों में जा मिलने के लिये भागा। माली ने देखा कि एक गोभी का पेड़ दौड़ा जा रहा है। यह अनहोनी बात देख कर वह कुछ डरा। धीरे धीरे वह गोभियों के पास गया। और नरायन को पकड़ना चाहा। नरायन फिर भागा और चिल्लाया। इस बार गोभी को आदमी की तरह भागते और चिल्लाते देखकर माली इतना डर गया कि वह बाग ही छोड़ कर भाग गया।

माली को डर कर भागते देख नरायन ने सोचा कि अब गाँव में चल कर जो मिले उसी को डराना चाहिये। बस वह गाँव की ओर चल पड़ा। इधर उधर दौड़ने लगा। लड़के लड़कियाँ उसको देखकर छिपने लगे। कुत्ते भूँकने लगे और बूढ़े जवान सब उसको भूत समझ कर मारने चले।

सारे गाँव में हल्ला मचगया कि गोभी आदमी की तरह चलती है और बोलती है। मालूम नहीं क्या होने वाला है जिसकी यह सूचना है।

दौड़ते दौड़ते नरायन जब थक गया तो वह भाग कर गाँव के बाहर चला गया। जाड़े का मौसम था। धूप ही में पड़ रहा और सोने लगा।

उधर नरायन सो रहा था उधर उसके माँ बाप उसके लिये दुखी होने लगे। माली ने दिन डूबते डूबते आकर कहा कि अब वह बाग की रखवाली नहीं कर सकता क्योंकि वहाँ गोभी आदमी की तरह चलती है और आदमी की बोली बोलती है। यह सुन कर नरायन के माँ बाप अपने बेटे के विषय में और सोचने लगे। उन्होंने सारे गाँव में ढूँढ़ डाला पर नरायन का कहीं भी पता न चला। तब बेचारे रोते पीटते लाचार होकर अपने घर लौट आए।

जहाँ, नरायन सो रहा था। वहीं कुछ मजदूर खेत में काम करने शाम को आए। वे आग और रोटी बनाने की तैयारी करने लगे। एक मज-दूर ने नरायन को देखा तो समझा कि गोभी पड़ी

है। वह उसे उठाकर ला
धोने के लिये छोड़ दिया। ठ
जाग उठा और घर की ओर
भी डर गये।

जब नरायन घर में घुसा
थी। उसकी माता रो रही थी। नर
देख कर उसने समझा कि वही गोभ
है। वह एक ओर को भागी। तब नरायन ब
"माँ! माँ मैं हूँ।"

अपने बेटे की बोली पहचान कर माँ खड़ी हो गई। नरायन ने जाकर उसके पाँव छुए। बस वह फिर वही पहले का सा नरायन हो गया और गोभी गायब हो गई। माँ ने देखा कि नरायन सिर से पैर तक भीगा है। उसने उसके कपड़े बदले और इस प्रकार दिन भर गायब रहने का कारण पूछा।

नरायन ने सारी कथा सुनाई। उस दिन रात भर यही चर्चा होती रही है। कहते हैं फिर नरायन ने कभी शरारत नहीं की। क्योंकि उसे मालूम

...। लड़का शरारत करता है
...सताता ही है, खुद भी दुःख

—लक्ष्मीकान्त वर्मा ।

चर्खा

... प्यारा, चर्खा प्यारा,
घर में आया चर्खा प्यारा।
माँ कातेगी सूत प्रेम से,
मैं देखूँगा चर्खा प्यारा॥
चर्खा प्यारा, चर्खा प्यारा,
दूर करेगा संकट सारा।
अब न विदेशी कपड़े लेंगे,
घर में आया चर्खा प्यारा॥
चर्खा प्यारा, चर्खा प्यारा,
है यह भारत का रखवारा।
मैं भी अब चर्खा कातूँगा,
जिससे हो कल्याण हमारा॥

—सोहनलाल द्विवेदी।

देख ले दिखलाय ले।
और फूट जाय तो खायले ॥

उसे देखेंगे और फूट जायगा तो दूध में डाल कर पीलेंगे।"

निम्न-लिखित उत्तर-प्रेषकों के उत्तर विशेष सराहनीय थे—

(१) श्री कुमारी बेनी बाई, महोबा।
(२) श्री ओम प्रकाश, मेरठ।
(३) श्री लक्ष्मी नारायण डाले, हरदा।
(४) श्री शान्ति स्वरूप, राया, मथुरा।
(५) श्री आवाल प्रसाद मिश्र, लखनऊ।

विशेष सूचना

"रामदत्त पन्त"—स्मारक पदक

जून मास के 'शिशु' में यह सूचना दी गयी थी—जिन उत्तर-प्रेषकों को पुरस्कार नहीं मिलता किन्तु जिनका नाम सराहनीय उत्तर प्रेषकों में छप जाता है उनमें से सब से अच्छे उत्तर प्रेषक को वर्ष के अन्त में एक रजत-पदक प्रदान किया जावेगा। उन बालकों को जिन्होंने पुरस्कार नहीं

पाया हताश न होकर प्रति मास इस बात का प्रयत्न करना चाहिये कि उनका नाम सराहनीय उत्तर-प्रेषकों में आजावे ।

इस सूचना के अनुसार जनवरी मास में सराहनीय उत्तर-प्रेषकों में से एक को रजत-पदक मिलेगा । बालकों को इस मास के प्रश्नों के उत्तर भी बड़ी सावधानी से भेजने चाहिए ताकि उनका नाम एक बार फिर छप जाय ।

नई पहेलियाँ

(१)

सुनाती हूँ सबको अपनी,
किसी की किन्तु न सुनती हूँ ॥
मित्र हों चाहे होंवे शत्रु,
बराबर सबको गुनती हूँ ॥

—लक्ष्मी कान्त वर्मा ।